International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

रसरत्नसमुच्चय का समेकित अवलोकन: एक समीक्षा अध्ययन

Dr. Rachana Sharma[1], Dr. Vijay Kumar Jatoliya[2]

[1]Assistant Professor, Department of Rasashastra & Bhaishajya Kalpana, Shri. Siradisai Baba Ayurveda Medical College & Hospital, Renwal, Jaipur
[2]Assistant Professor, Department of Rasashastra & Bhaishajya Kalpana, Pt. Dr. Shivshaktilal Ayurveda Medical College & Hospital, Ratlam, MP

ABSTRACT

आयुर्वेद के क्षेत्र में रस शास्त्रीय ग्रंथो की महत्वपूर्ण भूमिका है। इन ग्रंथो में ररसरत्नसमुच्चय का महत्वपूर्ण योगदान है। रसरत्नसमुच्चय 13वीं शताब्दी का एक ग्रंथ है जो आचार्य वाग्भट्ट द्वारा लिखा गया था, जो खनिज और धातु मूल की दवाओं की तैयारी और गुणों से संबंधित एक उपयोगी संकलन है। यह पाठ कीमिया के क्षेत्र में भारतीय विशेषज्ञता की स्थिति पर प्रकाश डालता है, जिसमें धातुओं/खनिजों के निष्कर्षण, शुद्धिकरण, चिकित्सीय रूप से उपयुक्त रूपों में रूपांतरण, कीमिया प्रयोजनों के लिए विकसित किए गए विभिन्न उपकरण और जड़ी-बूटियों-खनिज तैयारियों का उपयोग करके कई बीमारियों के उपचार शामिल हैं। वर्तमान कार्य भारतीय कीमिया के विकास में इसकी उपयोगिता और योगदान को उजागर करने के लिए रसरत्नसमुच्चय की प्रमुख विशेषताओं को संक्षेप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। अंबिकादत्त शास्त्री द्वारा लिखित सुरतनोज्वला हिंदी टिप्पणी से रसरत्नसमुच्चय की आलोचनात्मक समीक्षा की गई और एकत्रित जानकारी की तुलना रसशास्त्र के अन्य उपलब्ध साहित्य से की गई। वाग्भट्ट द्वारा उल्लिखित कुछ तथ्यों का पता लगाने के लिए आधुनिक विज्ञान के अनुसंधान का भी उपयोग किया गया। रसरत्नसमुच्चय उपलब्ध प्राचीन साहित्य में एक सटीक ग्रंथ है। इसमें आयुर्वेद की सभी आठ शाखाएं शामिल हैं, हालांकि यह मुख्य रूप से रसशास्त्र के चिकित्सीय पहलुओं से संबंधित है और बीमारियों के इलाज में धातुओं और खनिजों के उपयोग पर जोर देती है। इसमें 30 अध्याय का विस्तृत विवरण है। धातुओं और खनिजों का वर्गीकरणय कुछ नए उपकरणों, फॉर्मूलेशन का वर्णन और गर्भावस्था में धातुओं और खनिजों के उपयोग को रोकना रसरत्नसमुच्चय की प्रमुख विशेषताएं हैं।

Keywords: रसरत्नसमुच्चय, खनिज, धातु, आयुर्वेद, शुद्धिकरण आदि ।

INTRODUCTION - रसरत्नसमुच्चय ग्रंथ काल-13वीं शताब्दी का अन्त का माना जाता है । इस ग्रन्थ के लेखक वैद्यपति सिंहगुप्त के पुत्र रस वाग्भट्ट है तथा जन्म स्थान-सिन्धु देश माना जाता है । यह ग्रंथ रस चिकित्सा का एक सर्वांगीण ग्रंथ है । इस ग्रंथ का निर्माण ग्रंथकार ने रससिद्ध आचार्य के ग्रंथो का अवलोकन कर किया है। यह एक स्वतंत्र ग्रंथ नही हैं, अपितु कुछ अन्य ग्रंथो के वचनो का संग्रह है। द्रव्यगुणशास्त्र, औषधनिर्माण शास्त्र, औषध विज्ञान शास्त्र इन सभी का समुचित समावेश किया गया है। ग्रंथकार ने स्वयं प्रथमाध्याय के 8वें श्लोक मे लिखा भी है कि 'एतेषां क्रियतेऽन्येषां तन्त्राण्यालोक्य संग्रहः'। इस ग्रंथ को सुबोध करने के लिये विभिन्न भाषाओं जैसे हिन्दी,अंग्रेजी,मराठी,गुजराती,संस्कृत मे अनेक टीकायें लिखी गयी है। संस्कृत भाषा मे लिखी हुई तीन व्याख्यायें प्रसिद्ध हैः-

1. पं.हजारीलाल सुकुल विरचित दीपिका व्याख्या(पटना से प्रकाशित)
2. पं.चिन्तामणि शास्त्री खरे विरचित सरलार्थ प्रकाशिनी(आनन्दाश्रमग्रन्थावली पूना से प्रकाशित)
3. पं.जीवानन्द विद्यासागर विरचित व्याख्या(कलकत्ता से प्रकाशित)
4. शिवदास सेन(तत्व बोधिनी संस्कृत व्याख्या) 18वीं शताब्दी

हिन्दी व्याख्याः

1. अम्बिकादत्त शास्त्री की हिन्दी व्याख्या(1996),
2. सिद्धिनन्दन मिश्र की सिद्धिप्रदा व्याख्या
3. प्रो- दत्तात्रेय अनन्त कुलकर्णी विज्ञानबोधिनी व्याख्या
4. डॉ. इन्द्रदेव त्रिपाठी की रसप्रभा टीका भी प्रसिद्ध है ।

आयुर्वेदीय रसशास्त्र तथा औषध निर्माण शास्त्र ये दोनो पूर्णतया वैज्ञानिक विषय होने के कारण तथा आधुनिक पाश्चात्य विज्ञान के सिद्धान्तो को लेकर वैद्य व वैद्यक की जिज्ञासा को यथासम्भव तृप्त करने की चेष्टा वर्तमान मे सबसे ज्यादा प्रचलित दत्तात्रेय अन्नत कुलकर्णी जी की विज्ञानबोधिनी भाषा टीका मे की गयी है।

विशेषतायें

- इस टीका मे मूलग्रंथ बडे अक्षरो मे छापा गया है तथा प्रत्येक प्रकरण का हिन्दी अनुवाद दिया गया है।
- अनुवाद के पश्चात् आवश्यकतानुसार वक्तव्य दिया गया है ।
- आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र मे प्राचीन भारतीय रससिद्धो ने सैकड़ो वर्ष के पूर्व जो प्रगति की,उसका गौरवपूर्ण उल्लेख स्थान स्थान पर किया गया है।

- इस वक्तव्य मे प्राच्य,प्रतीच्य तथा प्राचीन रसशास्त्रविषयक सिद्धान्तो का समन्वय किया गया है।
- इस ग्रंथ मे वर्णन किये हुये प्रत्येक कर्म को विद्यार्थी के दृष्टिकोण से देखकर सभी आवश्यक विषयो को सुपष्ट किया गया है।
- ग्रंथ को उपयुक्त बनाने के लिये प्रारम्भ मे विस्तृत विषयानुक्रमाणिका और अन्त मे ग्रन्थान्तर्गत संस्कृत,हिन्दी,अंग्रेजी शब्दो की शब्दानुक्रमाणिका भी दी गयी है ।
- द्रव्यगुणशास्त्र, औषधनिर्माण शास्त्र, औषध विज्ञान शास्त्र इन सभी का समुचित समावेश किया गया है।
- रसचिकित्सा का क्रमबद्ध वर्णन किया गया है।

इस ग्रंथ मे सर्वप्रथम बडे पैमाने पर रसौषधियो का संग्रह किया गया। यह ग्रंथ 30 अध्यायो मे निबद्ध है तथा सर्वोपयोगी है। इस ग्रंथ के पूर्वार्ध व उत्तरार्ध करके दो भाग स्वयं ग्रन्थकार ने ही किये है। इस ग्रंथ की सरलार्थप्रकाशिनी नाम की संस्कृत टीका में श्रीयुत चिन्तामणि खरे ने इस सम्पूर्ण ग्रंथ को सूत्र स्थान 1 से 11 तक (रसद्रव्यो का विस्तारपूर्वक वर्णन) चिकित्सा स्थान 12 से 27 तक चिकित्सा विषयक वर्णन(निदान, लक्षण, चिकित्सासूत्र, रसौषधि योग) तथा कल्प स्थान 28 से 30 तक कल्प स्थान इस तरह 30 अध्यायो मे विभक्त किया है।

इस ग्रंथ का वैशिष्ट्य पूर्वार्ध मे ही है, क्योंकि पूर्वार्ध में रसशास्त्रविषयक सम्पूर्ण ज्ञातव्य विषयों का समावेश अव्याप्ति, अतिव्याप्ति तथा पुनरुक्ति आदि सम्पूर्ण दोषो को टालते हुए बड़ी योग्यता के साथ 11 अध्यायों मे 1262 श्लाकों में किया गया है। रसशास्त्र तथा रसौषधिनिर्माणशास्त्र की दृष्टि से पूर्वार्ध विशेष उपयुक्त है। इसके पूर्वार्ध का लगभग 2/3 भाग सोमदेव विरचित रसेन्द्रचूड़ामणि से लिया गया है।इसके उत्तरार्ध मे रसानामथ सिद्धानां चिकित्सार्थोपयोगिनाम् बड़ी योग्यता के साथ संक्षिप्त रोगनिदान के सहित संग्रह किया गया है। रसौषधि-चिकित्सा की दृष्टि से उत्तरार्ध विशेष उपयुक्त है।

रसरत्नसमुच्चय मे कई प्रयोग पाणिनीय व्याकरण के विरूद्ध पाये जाते है जैसे-अध्याय 12/27 में ताम्रपात्रोदरं लिपेत्।

ग्रंथ का अध्याय के अनुसार विवरण

प्रथमाध्याय- मंगलाचरण मे भगवान शिव की उपासना, 41 रससिद्धप्रदायको के नाम, रसशास्त्र परिभाषा, हिमालय वर्णन, रसोत्कर्ष वर्णन, रसपूजा के 5 प्रकार व इसका फल, मुर्छित पारद के गुण तथा पारद

उत्पत्ति वर्णन, पारद के भेद, पारद निरूक्ति, पाँच प्रकार की पारद गतिया, उर्ध्वपातन यंत्र द्वारा हिंगुल से पारद प्राप्ति का वर्णन, पारद का वैज्ञानिक वर्णन व पारद के खनिजो का वर्णन व प्राप्ति स्थान, आदि का विस्तृत वर्णन है।

द्वितीय अध्याय- इस अध्याय में 8 महारसों के नाम व स्वरूप उत्पत्ति, खनिज व भेदो का वर्णन, प्राप्ति स्थान, गुण, ग्राह्य अग्राह्य लक्षण,द्रव्यो का शोधन-मारण की विभिन्न विधियाँ तथा सत्वपातन आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है।

अभ्रक के 4 भेद व उनका वर्णन, अभ्रक के खनिज व प्रशस्त अभ्रक के लक्षण, धान्याभ्रक निर्माण, सत्वो के मृदुकरण वाले द्रव्य(मधु, तैल, वसा, घृत), दिव्याभ्ररसायन का वर्णन किया गया है। वैक्रान्त परीक्षा, गुण, 7भेद, वैक्रान्त रसायन आदि का वर्णन किया गया है। माक्षिक के 2 भेद(हेम व रौप्य), स्वर्णमाक्षिक रसायन, स्वर्णमाक्षिक सत्व द्रावण(एरण्ड तैल मे घोंट) आदि का वर्णन किया गया है। विमल के 3 भेद(हेम,रौप्य,कांस्य), विमल रसायन आदि का वर्णन किया गया है। शिलाजतु 2 भेद(गौमूत्र व कर्पूर), इसकी उत्पत्ति परीक्षा, शिलाजतु रसायन, कर्पूर शिलाजतु का विस्तृत वर्णन किया गया है। उत्तम सस्यक के लक्षण गुण, तथा तुत्थ मुद्रिका(सस्यक सत्व व केंचुए का सत्व) का वर्णन। चपल के 4 भेद(गौर श्वेत अरूण कृष्ण), विष व उपविष(भांग, धतुरा, कनेर, वत्सनाभ) की सहायता से सत्वपातन आदि का वर्णन किया गया है। रसक 2 भेद(दर्दुर कारवेल्लक),खर्परसत्व रसायन आदि का वर्णन किया गया है।

तृतीयाध्याय- इस अध्याय में 8 उपरसों के तथा 8 साधारण रसो के नाम व स्वरूप उत्पत्ति, खनिज व भेदो का वर्णन, प्राप्ति स्थान, गुण, ग्राह्य अग्राह्य लक्षण,द्रव्यो का शोधन-मारण की विभिन्न विधियाँ तथा सत्वपातन आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है।

सर्वप्रथम गन्धकोत्पत्ति, गन्धक भेद 3(वर्ण भेद से चार प्रकार), शुद्ध गंधक सेवन लाभ(1शाण मात्रा), गन्धक द्रुति निर्माण, गन्धक के विभिन्न प्रयोग(कण्डूहर प्रयोग), गंधक तैल निर्माण आदि का वर्णन किया गया है। गैरिक 2 भेद(स्वर्ण पाषाण), गुण सत्वपातन का वर्णन किया गया है।कासीस 2 भेद(बालु व पुष्प), शोधन सत्वपपतन आदि का वर्णन किया गया है। तुवरी के भेद 2(फटकी फुल्लिका), तथा सोमल हरताल मैनसिल का तुलनात्मक वर्णन, हरताल गुण, अशुद्ध हरताल सेवन दोष, शोधन मारण, हरताल सेवन मे अनुपान व पथ्यापथ्य, हरताल भस्म परीक्षा का वर्णन, साथ ही रसमाणिक्य का भी वर्णन किया गया है।मनःशिला के 3 भेद(श्यामांगी कणवीरका खण्डाख्य), अशुद्ध व शुद्ध मैनसिल के दोष व गुण

आदि। अंजन के प्रकार 5(स्त्रोतांजन सौवीरांजन, रसांजन, पुष्पांजन, नीलांजन)अंजन के लक्षण गुण, स्त्रोतांजन के द्वारा रसबन्धन हेतु स्त्रोतांजन मे गोबर स्वरस,गोमूत्र,घी,मधु,वसा इनमे से प्रत्येक पदार्थ की 7भावना दे।

कंकुष्ठ के संदर्भ मे विभिन्न मत, इसके प्रयोग(विरेचन के लिए 1 यव की मात्रा मे शुण्ठी जीरक आदि के अनुपान के साथ), आदि का वर्णन किया गया है। इसके साथ ही रस,उपरसो के शोधन की सामान्य विधि(सूर्यावर्तक, केला, वंध्या, कर्कोटकी, देवदाली, सैंजना, वज्रकन्द, जलपिप्पली, मकोय) इनमे से किसी एक स्वरस या क्वाथ की भावनाएँ लवण क्षार अम्ल इन द्रव्यो के साथ रसो व उपरसो को अनेक बार दे देने से वे शुद्ध हो जाते है।

साधारण रस वर्णन में कम्पिल्लक के गुण, गौरीपाषाण के 3 प्रकार(स्फटिकाभ, शंखाभ, हरिद्राभ), हिंगुल के 2 भेद(शुकतुण्ड,हंसपाद) नवसादर का परिचय तथा सिरदर्द, गिनीवर्म रोग 1 माशे की मात्रा मे उपयोग, साथ ही सुवर्ण शोधन, शंखद्राव बनाने व विड द्रव्य आदि आदि के निर्माण। वराटिका के 3 भेद, अग्निजार, गिरिसिंदूर, मृदारश्रृंग का विस्तृत वर्णन किया गया है।

चतुर्थाध्याय- इस अध्याय मे 9 रत्नो का वर्णन किया गया है। रत्नो के नाम, नवग्रह से रत्नो का सम्बन्ध, रत्नो के भेद, शोधन द्रव्य, रत्नो का सामान्य व विशेष शोधन, रत्नो की द्रावण विधि, रत्नधारण गुण, उपरत्नो का वर्णन तथा द्रुति संरक्षण विधि का भी वर्णन किया गया है।

पञ्चमाध्याय- इस अध्याय मे लोहवर्ग को 3 भागो मे वर्गीकृत किया गया है।
शुद्ध लोह-स्वर्ण, रजत, ताम्र, लौह
मिश्र लोह-पित्तल, कांस्य, वर्तलोह
पूति लोह-नाग, वंग

उपरोक्त सभी धातुओ का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। धातुओ के नाम, प्रकार, उत्पत्ति स्थान, सामान्य व विशेष शोधन, मारण, अशुद्ध धातु सेवनजन्य दोष, लोह द्रुति, लोह मारण द्रव्य, अष्ट लोह द्रावण विधि, भानुपाक, स्थालीपाक, पुटपाक विधि, भूनाग सत्व, तैल पातन विधि का वर्णन किया गया है।

षष्ठाध्याय-इस अध्याय के प्रारम्भ मे गुरू, शिष्य, अनुचर, व अयोग्य शिष्य के लक्षण व उनके कर्तव्यो का वर्णन किया गया है। रसशाला का वर्णन, शिष्य दीक्षा विधि का वर्णन, रस मण्डप मे रसलिंग स्थापना का वर्णन, रसपूजा विधि व फल, कालिनी स्त्री के लक्षण, रससिद्ध के नाम आदि का वर्णन किया गया है।

सप्तम अध्याय-रसशाला निर्माण के लिये स्थान वर्णन, रसशाला संग्रहणीय उपकरण, भैरव की स्थापना, चालनी के भेद, उपल के पर्याय, कूपी के पर्याय व कूपी निर्माण के द्रव्य, चषक पर्याय, अमृतहस्त व दग्धहस्त वैद्य के लक्षण, रससिद्ध के गुण

अष्टमाध्याय- इस अध्याय मे धनवन्तरी भाग व रूद्र भाग की परिभाषा, कज्जली रसपंक नवनीत पिष्टी कुछ अन्य महत्वपूर्ण परिभाषाये जैसेः-तारारक्ती, हेमरक्ती, पिंजरी, चन्द्रार्क बीज, निरूत्थ, शुद्धावर्त, बीजावर्त, पारद के 18 संस्कार, द्रुति, वेध के प्रकार आदि का वर्णन किया गया है।

नवमाध्याय- इस अध्याय मे यंत्र की निरूक्ति परिभाषा, दोला यंत्र, स्वेदन यंत्र, पातन(उर्ध्व अधः व तिर्यक पातन), कच्छप यंत्र, दीपिका यंत्र, बालुका यंत्र, लवण यंत्र, जारण यंत्र, विद्याधर यंत्र, सोमानल यंत्र,गर्भ यंत्र, नाभि यंत्र, खल्ल यंत्रआदि का वर्णन किया गया है। कुल 31 यंत्रो का वर्णन किया गया है।तोय मृत्तिका व वह्नि मृत्तिका मे अन्तर, खल्व यंत्र के प्रकार आदि का वर्णन किया गया हैं।

दशमाध्याय- इस अध्याय मे मूषा(18), कोष्ठी(4), पुट(10) आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है। मूषा के पर्याय, मूषा निर्माणार्थ उपयोगी सामग्री व मृत्तिका, मूषा की परिभाषा, विभिन्न प्रकार की मूषाओ का वर्णन जैसे-वज्र मूषा, ग्रह मूषा, रौप्य मूषा आदि।पुट की परिभाषा, पुट के लाभ व लक्षण, विभिन्न प्रकार के पुट का विस्तृत वर्णन जैसे-महापुट, गजपुट आदि। उपल के पर्याय, लवण वर्ग, क्षारत्रय व क्षारपंचक, तैल वर्ग, मूत्र वर्ग, वसा वर्ग, अम्ल वर्ग, विष उपविष वर्ग, रक्त वर्ग, शोधनीय गण, द्रावण वर्ग आदि। कोष्ठी की परिभाषा, कोष्ठी के प्रकार जैसे-अंगार कोष्ठी, पाताल कोष्ठी, वंकनाल का वर्णन। इसके अलावा मूत्र वर्ग वसा वर्ग अम्ल वर्ग विष वर्ग तथा रसद्रव्य के शोधन, मारण, जारण मे उपयोगी द्रव्यो का वर्णन किया गया है।

ग्यारहवाँ अध्याय- मान, 18 संस्कारो के नाम व संस्कार मे उपयोगी द्रव्य, पारद के दोष, कांजिक निर्माण प्रकार, बंध की परिभाषा, पारद के 26 बंध का वर्णन, रस मारण की विधि, रसकर्पूर, कृष्ण भस्म, मकरध्वज, पारद भक्षण मे पथ्य अपथ्य आदि का वर्णन किया गया है।

उत्तर स्थानः-

चिकित्सा स्थान मे अध्याय 12 से 25 मे(ज्वर चिकित्सा से क्षुद्ररोग-गुह्यनयादि चिकित्सा) कुल 64 व्याधियो के निदान, लक्षण व व्याधि अनुसार चिकित्सा उनके योगो का विस्तृत वर्णन किया गया है।

अध्याय 12 (ज्वर चिकित्सा)-40 योग (मृत्युंजय रस, ज्वरांकुश रस, लोकनाथ गुटिका आदि)

अध्याय 13(रक्तपित्त चिकित्सा)-7 योग (चन्द्रकला रस, सितामृता योग आदि)

कास चिकित्सा-11 योग (बोलबद्ध रस, रत्नकरण्ड रस आदि)

श्वास चिकित्सा-9 योग (श्वासान्तक रस, सूर्यावर्त रस आदि)

हिक्का चिकित्सा-8 योग (शिलापूत रस, मन्थानभैरव रस आदि)

स्वरभंग चिकित्सा-1 योग (पर्पटी रस)

अध्याय 14(राजयक्ष्मादिरोगनिदान चिकित्सा)-14 योग (लोकनाथ रस, हेमगर्भपोटली रस, राजमृगांक रस आदि)

इसी अध्याय मे अरूचि रोग मे 1 योग, छर्दि रोग मे 3 योग, हृनदयरोग मे 4 योग, तृष्णारोग मे 1 योग, मदात्यय रोग मे 2 योग वर्णित है।

अध्याय 15(अर्शरोग निदान चिकित्सा)-22 योग (अर्शकुठार रस, दुर्नामहर लेप, आदि)

अध्याय 16(उदावर्तरोग निदान चिकित्सा)-1 योग

इसी अध्याय मे अतिसार रोग मे 8 योग (आनन्दभैरव रस, लोकनाथ रस) ग्रहणी रोग मे 16 योग (अग्निकुमार रस, गजकेसरी रस, ग्रहणीकपाट रस, अजीर्ण चिकित्सा मे अजीर्णकण्टक रस आदि, विसूचिका मे विध्वंस रस आदि)

अध्याय17(मूत्रकृच्छ अश्मर्यादिरोगचिकित्सा)-16 योग पाषाणभेदी रस (त्रिविक्रम रस, तथा इसके साथ ही प्रमेह मे 31 योग वसन्तकुसुमाकर रस, रामबाण रस, राजमृगांक रस आदि)

अध्याय 18(विद्रधि वृद्धि गुल्म यकृतादिरोग चिकित्सा)-29 योग तथा शूल चिकित्सा मे 24 योग, अम्लपित्त मे 6 योग वर्णित है। सर्वेश्वरपर्पटी रस, वैश्वानर रस, सर्वांगसुन्दर रस, त्रिनेत्र रस, उदयभास्कर रस, लीलाविलास रस, पित्तान्तक रस आदि।

अध्याय 19(जलोदरपाण्डुशोथादि रोग चिकित्सा)-27 योग (मृत्युंजय रस, सूर्यप्रभा गुटिका, कालविध्वंस रस, सुधापंचक रस आदि)

अध्याय 20(विसर्पकुष्ठश्वित्रादिरोग चिकित्सा)-81 योग तथा कृमिरोग मे 5 योग (विसर्पहर तैल, आरोग्यवर्धिनी वटी, तालकेश्वर रस, कृमिघ्न रस आदि)

अध्याय21(शीतवातस्पर्शादि चिकित्सा)-60 योग (शीतारि रस, सर्वेश्वर रस, मार्तण्डेश्वर रस, वातविध्वंस रस, योगराज गुग्गुलु आदि)

अध्याय 22(बन्ध्यागर्भिण्यादिरोग चिकित्सा)-60 योग (जयसुन्दर रस, बर्धमान रस, सौभाग्यशुण्ठी, स्फूर्जकादि तैल, अश्वगंधाघृत आदि)

अध्याय23(उन्मादवातादिरोग चिकित्सा)-50 योग (अपस्मारनाशक रस, सर्वेश्वर रस, चण्डभैरव रस, आदि)इसी अध्याय मे नेत्ररोग चिकित्सा के लिये ताम्रद्रुति, गंधकद्रुति, तिमिरहरांजन, शिगुरतैल, मरिचांजन, पटलहरेन्द्र रस आदि।

अध्याय 24(कर्णनासामुखादिरोग चिकित्सा)-63 योग (क्रिमिकर्णादि तैल, मणिपर्पटी रस, ताप्यादि वटी, हेमतारादि वटिका, शिरोरोगादि रस आदि) व्रण मे जात्यादिघृत, भगन्दर मे रविताण्डव रस, कालाग्नि रस, तथा अर्बुदहर रस, छुछुन्दरी तैल आदि।

अध्याय 25(क्षुद्ररोगगुह्यनयादि रोग चिकित्सा)-86 योग (विषादि लेप, दारूवर्ति, रसादि लेप, श्लीपदहर रस, आदि। विषचिकित्सा मे सूतसोमराजी योग, सूतभस्म प्रयोग, कनकादि वटी आदि)

अध्याय 26(रसायनविधिर्नाम)-30 योग (सर्वरोगहर रसायन, पिप्ल्यादि रसायन, त्रिफलारसायन, कुष्ठादिरसायन, लक्ष्मीविलासरस आदि)

अध्याय 27(वाजीकरणनिरूपण चिकित्सा)-33 योग (कामदेवरस, सूतेन्द्ररस, काम धेनुरस आदि।

अध्याय 28(मृतलोहकल्पनिरूपणं)- इस अध्याय मे रस के भेद(अष्टलौह भेद), धातुओ के लक्षण, शोधन, मारण के साथ ही मृत्युहारी रस, विभिन्न लौहकल्पो का वर्णन, ताम्रद्रुतिसंज्ञक लौह कल्प, जीर्ण ज्वरादि मे लौहकल्प आदि कुल 28 लौह कल्पो का वर्णन किया गया है।

अध्याय 29(विषकल्प चिकित्सा)-विष उत्पत्ति, विष के भेद,कन्द विष का वर्णन, विभिन्न प्रकार के विष योग जैसे लाक्षादि तैल विषादी गुटिका तथा विभिन्न रोगानुसार विष कल्पो का वर्णन है। कुल 65 विष कल्पो का वर्णन है। जीर्णज्वर मे विष कल्प श्वास कास मे विष कल्प, तिमिर विष कल्प, आदि।

अध्याय 30(रसकल्प चिकित्सा)-इस अध्याय मे रस मारण(पारद) की विधि, रसमारण के प्रकार, पारद जारण के प्रकार, पारद जारण मे निषिद्ध द्रव्य, रोगानुसार पारद भस्म प्रयोग व रसकल्प, रसप्रयोग उपचार विधि तथा अध्याय के अन्त मे औषध सेवन विधि, आचार रसायन तथा चिकित्सा कर्म अवधि आदि का वर्णन किया गया है।

DISCUSSION

आर.आर.एस. मटेरिया-मेडिका, फार्मेसी और चिकित्सा पर एक व्यवस्थित और व्यापक ग्रंथ है। इसकी विषय-वस्तु की व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक व्यवस्था, किसी भी आधुनिक कार्य के लिए श्रेयस्कर होगी। इसका मूल्य और भी बढ़ जाता है क्योंकि मटेरिया-मेडिका रसायन विज्ञान के साथ सामंजस्यपूर्ण रूप से मिश्रित होता है। वाग्भट ने अपने निम्नलिखित शब्दों में वैज्ञानिक व्यवस्था के महत्व पर भी जोर दिया। सफलता के लिए, विज्ञान को व्यवस्थित होना चाहिए और प्रणाली को वैज्ञानिक होना चाहिए। आर.आर.एस. के विषय की व्यवस्थित व्यवस्था को तालिका 2 में संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। रसशास्त्र की बेहतर समझ के लिए, विभिन्न शब्दावली, उपकरण और उपकरणों को अध्याय 2, 3 और 4 में रखा जाना चाहिए था, लेकिन वर्तमान में 8, 9 और 10 वें अध्याय में हैं। क्योंकि संस्कार, महरसा, उपरसा, धातु आदि के मुख्य विषयों पर जाने से पहले, प्रसंस्करण में उपयोग की जाने वाली शब्दावली, माप और विभिन्न उपकरणों को जानना प्रासंगिक है।

REFERENCES

1. Kulkarni DA (2010), editor. *Vigyanbodhini Commentary on Rasaratnasamuchchya of Vagbghata.* 2nd ed. 1, New Delhi: Meharchanda Lachhamanadas Publication;.
2. Shastri A. (1995), *Rasaratnasamuchchya of Vagbghata.* 9th ed. 8. Varanasi: Choukhamba Sanskrita Publication;.
3. Dole VA (2008), editor. *English Translation of Rasaratnasamuchchya of Vagbghata.* 2nd ed. 6, Varanasi: Chowkhamba Sanskrita Series Office.